Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 69-74

दादू दयाल का जीवन एवं दर्शन

डॉ. पीयूष कुमार पारीक*

आचार्य, हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, टोंक।

*Corresponding Author: hemantsinghtomer221@gmail.com

***Citation**: पारीक, पीयूष. (2025). दादू दयाल का जीवन एवं दर्शन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 69–74.*

सार

लोक कल्याण और मानवता पर किये गये उपकार की दृष्टि से हिन्दी का मध्यकालीन भक्ति–साहित्य न केवल भारत की अपितु विश्व–साहित्य की अमूल्य निधि है। मनुष्य को ईश्वर से, भक्ति से, ज्ञान से और परस्पर सामाजिक दृष्टि से जोड़ने में इसने एक सशक्त सेतु का कार्य किया है। सगुण भक्ति में विश्वास रखने वालों ने राम और कृष्ण के रूप में आदर्श मानवता के रूपक गढ़े हैं वहीं निर्गुण संत कवियों ने समाज सुधार, लोक कल्याण एवं सामाजिक सद्भाव की नींव रखी है। ऐसे महान सन्त कवियों में कबीर, नानक और नामदेव के साथ–साथ दादू दयाल का अपना एक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय स्थान है। उनका कृतित्व दोहों, पदों व साखियों के रूप में उपलब्ध है। दादू के जीवन और दर्शन में एकेश्वरवाद, निर्गुण निराकार ईश्वर की उपासना, ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति की महत्ता, सात्विक जीवन, जाति एवं वर्गभेद की आलोचना, निश्छल समर्पण, रहस्यवाद, उत्कट प्रेमानुभूति, सत्संगति की महत्ता, दया, ममता एवं करूणा जैसे मानवीय मूल्यों की स्वीकृति अपने सफलतम स्तर पर हुई है। 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' जैसे पदों में उनका भाव एवं कलापक्ष अपनी चरमसीमा पर पहुँचा हुआ प्रतीत होता है।

शब्दकोश: *एकेश्वरवाद, रहस्यवाद, निर्गुण ब्रम्ह, जीवन–दर्शन, अलख निरंजन, अलख दरीबा।*

प्रस्तावना

अनेकानेक सन्त कवियों की भाँति सन्त दादू दयाल के जीवन परिचय के विषय में भी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनके जन्म, माता–पिता, गुरु, निवास स्थान तथा मृत्यु आदि विषयों के बारें में कई तरह की किम्वदन्तियाँ प्रचलित है। मान्यता है कि उनका जन्म वि.सं 1601 अर्थात 1544 ई. में वर्तमान गुजरात राज्य के अहमदाबाद में हुआ था, यह भी कि कबीर की भांति वे साबरमती नदी में नन्हे बालक के रूप में एक टोकरी में तैरते हुए पाये गये थे। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने कहीं लिखा है कि इनका परिवार रूई धुनने का व्यवसाय करता था। दादू पंथी विद्वान इनके ब्राम्हण होने का दावा करते है जबकि कुछ लोग उन्हें मुस्लिम धुनिया जाति का बताते हुए उनका वास्तविक नाम 'दाऊद' भी बताते हैं। दादू पंथी विद्वानों के अनुसार कोई बुढ्ढन बाबा या वृद्धानन्द इनके गुरू थे जिनसे इन्होंने गुरु दीक्षा ग्रहण की थी। दादू का अधिकांश जीवन एक यायावर सन्त की भाँति गुजरात, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के अंचलों में व्यतीत हुआ। माना जाता है कि सम्राट

** Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

अकबर से भी इनकी मुलाकात फतेहपुर सीकरी में हुई थी और इनके विचारों से अकबर बहुत प्रभावित थे। दादू और अकबर के बीच चालीस दिनों तक आध्यात्मिक चर्चा भी हुई थी। यद्यपि ऐतिहासिक दस्तावेजों में यह जानकारी उपलब्ध नहीं है। यह अनुमान का विषय है।[1] दादू दयाल की मृत्यु वि.सं. 1660 अर्थात् 1603 ई.में भूतपूर्व जयपुर राज्य के साँभर के समीप नरैना नामक गाँव में हुई थी, जहाँ पर आज भी उनकी प्रमुख पीठ स्थापित है और यह दादू पंथ का सबसे प्रमुख तीर्थ स्थान है। दादू ने जिस ब्रम्ह संप्रदाय का प्रवर्तन किया आगे चलकर वही दादू पंथ के नाम से प्रसिद्व हुआ। संतदास, रज्जब, जगन्नाथदास, गरीबदास, बधना, सुन्दरदास और जनगोपाल इनके मुख्य शिष्य थे, इनमें भी सुन्दरदास एवं रज्जब का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है।

दादू की रचनाऐं

दादू दयाल के पदों का संकलन इनके प्रमुख शिष्यों द्वारा किया गया है। रज्जब जी ने 'अंग वधू' नाम से इनके पदों को संकलित किया, वहीं संतदास और जगन्नाथ दास ने 'हरडे वाणी' शीर्षक से पदों को संकलित किया। इन रचनाओं में दादू की वाणी साखियों, दोहों और पदों के रूप में उपलब्ध होती है। सुधाकर द्विवेदी, आचार्य क्षितिमोहन सेन तथा नागरी प्रचारिणी सभा काशी के द्वारा भी इनकी वाणी का संकलन एवं प्रकाशन का कार्य किया गया है, जो दादू साहित्य में अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है।

दादू की वाणी को सारवान ढंग से समझने और सहेजने में उनके सबसे प्रसिद्ध शिष्य रज्जब की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संत रज्जब ने दादू के उपदेशों एवं वाणी का संकलन 'अंगवधू' के नाम से किया है। उनकी 'सर्वांगी' में दादू के उपदेश संकलित है। हालांकि बाद में दादू वाणी पर चन्द्रिका प्रसाद, बालेश्वरी प्रसाद, स्वामी नारायण दास एवं स्वामी जीवानंद का साहित्यिक कार्य भी ऐतिहासिक महत्व रखता है।

संत दादूदयाल के साहित्य में ज्ञान और भक्ति

दादू नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवत :।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगत : ।।

संत–काव्य को हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि माना गया है, निश्चित रूप से इसका आधार है उसका सामाजिक पक्ष। देश की सामाजिक और भावात्मक एकता के लिये जिन संतो के प्रयास स्तुत्य रहे हैं उनमें कबीर, नामदेव, नानक और दादूदयाल का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। जीवन–दर्शन और भक्ति भावना की दृष्टि से देखा जाये तो दादू कबीर की ही परंपरा और विरासत को आगे बढ़ाने वाले संत कवि हैं। लगभग सभी संत–कवियों ने अपने जीवन–दर्शन में एकेश्वरवाद, निर्गुण ब्रम्ह, माया–मोह का खण्डन, गुरु की महत्ता, ज्ञान और भक्ति, जाँति–पाँति का खण्डन, कर्मकाण्डों व आडम्बरों का विरोध आदि बातों को शामिल किया है। कबीर और दादू भी इनसे अलग नहीं है, जिस तरह कबीर ने अपने परिवार के बीच बैठकर 'कबीर–वाणी' का सृजन किया, उसी तरह दादू ने भी अपनी गृहस्थी का भार संभालते हुए अपने 'अलख दरीबा' में बैठकर अलख निरंजन का चिंतन और अनुभव किया। दादू का यह चिंतन दादू–वाणी में अपनी पूरी अस्मिता के साथ देखा जा सकता है। कहीं न कहीं दादू कबीर के अनुवर्ती होने के बावजूद उनसे विशिष्ट भी प्रतीत होते हैं क्योकि उनकी वाणी में खण्डन और निषेध से आगे बढ़कर रचनात्मक तत्व भी मौजूद हैं। कबीर हों चाहे दादू, नानक हों या रैदास, नामदेव हों या रज्जब उनके जीवन–दर्शन पर हमें चर्चा करनी हो तो इनके ज्ञान एवं भक्ति सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करना ही होगा। इन्हीं दो बीजों से उनके अन्य विचार रूपी वृक्षों या शाखाओं का प्रस्फुटन होता है।

ज्ञान तथा भक्ति सम्बन्धी विचारों को दृष्टि में रखे बिना किसी संत अथवा भक्त के जीवन–दर्शन की समीक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि भारतीय साधना में ज्ञान, भक्ति व प्रेम को ही ईश्वर प्राप्ति का साधन स्वीकार किया है।

संत दादूदयाल चूंकि कबीर की निर्गुण ज्ञान मार्गी शाखा के अनुगामी है अतः वे भी परमात्म तत्व की प्राप्ति में ज्ञान मार्ग को अत्यधिक महत्व देते हैं। दादूवाणी में परमात्मा का साक्षात्कार कैसे किया जा सकता है,

इस पर विस्तार से विवेचन किया गया है। दादू के अनुसार "अज्ञात, अव्यक्त परमात्मा को पाने के दो ही साधन है पहला ज्ञान और दूसरा भक्ति। ज्ञान मार्ग के अनुसार शब्द द्वारा उस वस्तु का परोक्ष ज्ञान प्राप्त किया जाता है और अंत में ज्ञानी द्वारा माया रूप अविद्या का सर्वनाश करके ज्ञान द्वारा उस परमात्मा का साक्षात्कार किया जाता है। दूसरा मार्ग परमात्मा का साक्षात्कार करने में भक्ति का है। भक्ति द्वारा परमात्मा को पाने की अवस्था दो प्रकार की है 1- श्रवण एवं स्मरण करना प्रथमावस्था है। 2 ईश्वर के दर्शन की उत्कट इच्छा ही प्रेम शब्द से व्यवहृत होती है। ईश्वर के प्रति प्रेमभाव दर्शाने पर उसे प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होती है और प्रीतम के नहीं मिलने पर मन में विरह रूपी अग्नि प्रज्ज्वलित होती है इसे ही प्रेमाभक्ति कहते हैं।[2] दादू के अनुसार ईश्वर–प्राप्ति के साधनों में ज्ञान का साधन अत्यंत कठिन भी है और समय सापेक्ष भी, अतएव दादू ज्ञान मार्गी होकर भी ज्ञान से अधिक भक्ति का महत्व प्रतिपादित करते हैं। दादू की नजर में मुक्ति तथा ईश्वर भक्ति अलग–अलग नहीं है अतः दादू मुक्ति की इच्छा न करके भक्ति की ही इच्छा करते हैं–

"भक्ति मांगू बाप भक्ति मांगू मूने थारा नाम नो प्रेम लागो।

आत्मा अंतर सदा निरंतर, ताहरी बाप जी भक्ति दीजै ॥

निर्गुण तथा सगुण भक्ति के दो प्रमुख भेद बताये गये हैं। दादू निर्गुण भक्ति के समर्थक हैं, दादू के अनुसार ईश्वर प्राप्ति के जो व्यवहार बताये गये हैं. वे उनकी निर्गुण भक्ति की ही विशेषताएँ हैं। वे इस प्रकार है– आपा अर्थात अहं का परित्याग, हरि स्मरण, तन और मन के विकारों को दूर करना, निर्वैरता एवं पूर्ण समर्पण। दादू की भक्ति भावना इन्हीं लक्षणों पर आधारित है, वे कहते हैं–

"आपा मेटे, हरि भजे, तन मन तजे विकार।

निर्वैरी सब जीव सों , दादू यह मत सार ।।[3]

ब्रम्ह विचार

किसी भी संत अथवा भक्त की भक्ति भावना में प्रथम स्थान उसके ब्रम्ह–निरुपण का होता है। कबीर की तरह दादू भी अपने अलख–निरंजन ब्रम्ह को 'राम' संबोधित करते हैं हालांकि यह दशरथ पुत्र राम नहीं है। दादू का उपास्य सगुणावतारी राम न होकर निर्गुण निराकार ब्रम्ह है जिसके लिये उन्होंने कहा है–

माया रुपी राम को सब कोई ध्यावे।

अलख आदि अनादि है सो दादू गावे।।

परब्रम्ह परापरं सो मम देव निरंजनम्।

निराकारं निर्मलं तस्य दादू वन्दनम्।।[4]

दादू का ब्रम्ह दोनो पक्षों से परे हैं, वे जिस ब्रम्ह को मानते हैं वह निर्गुण, निराकार, निरंजन सब प्रकार के भेदो से अलग है –

दादू अलह राम का, द्वै पख थैं न्यारा।

रहिता गुण आकार का, सो गुरु हमारा।।[5]

इस प्रकार निरंजन, निराकार, निर्विकार होते हुए भी दादू का आराध्य सब प्रकार से समर्थ और कर्ता है वह चाहे तो हाथी को चींटी अथवा चींटी को हाथी, मेरु को राई अथवा राई को मेरु बना सकता है। दादू ब्रम्ह के विषय में गीता के विचारों का भी समर्थन करते हैं, उनका कथन है–

ऐसा तत्व अनुपम भाई, मरै न जीवै काल न खाई।

पावक जरै न मारयो मरई, काट्यो कटै न टार्‌यो टरई।।[6]

नाम स्मरण का महत्व

नाम–स्मरण, भजन, कीर्तन भारतीय भक्ति साधना के महत्वपूर्ण अंग हैं। निर्गुण वादी संतों ने कलिकाल में नाम स्मरण की बड़ी महिमा बताई है, चाहे वे कबीर हो अथवा नानक, दादू हो अथवा नामदेव, इनके अनुसार भगवन्नाम की नौका को आधार बना कर ही साधक संसार सागर को पार कर सकता है। संत दादू कहते हैं कि सर्व प्रकार के पाखण्डों–प्रपंचों से दूर रहकर मात्र नाम–स्मरण से ही प्रभु की भक्ति की जा सकती है–

दादू नीका नाम है, सो तू हिरदै राख।
पाखण्ड परपंच दूर कर सुन साधुजन की साख।।
हरेर्नाम, हरेर्नाम , हरेनमि केवलम्।
कलौ नास्त्येव, नास्त्येव, नास्त्येव, कलिरन्यथा।।[7]

दादू के अनुसार भक्त जब कहते, सुनते, खाते–पीते, सब कामों के साथ राम नाम का स्मरण करता है तभी जीवात्मा रुपी ह्रदय–कमल को शांति व संतोष प्राप्त होता है। राम नाम का स्मरण सब प्राणों की औषधि है जो कोटि–कोटि विकारों को नष्ट कर भक्त को निर्मल बना देती है। भगवत् नाम रूपी स्मरण–गुहा को छोड़ साधक को अन्यत्र कहीं जाना नहीं चाहिए–

दादू कहतां सुनता राम कहि, लेतां देतां राम।
खातां पीतां राम कहि, आत्म कमल विश्राम।।
दादू राम नाम निज औषधि, काटे कोटि विकार।
विषम व्याधि तै उबरे, काया कंचन सार।।[8]

गुरु का महत्व

कबीर, नानक, दादू, रैदास सभी ज्ञान –मार्गी संतों के पदों में गुरु को गोविन्द के समकक्ष मान कर उसकी मुक्त कंठ से वंदना की गयी है। वृद्धानंद या बुढ्ढन बाबा को विद्वानों ने दादू का गुरु माना है, कई पदों में दादू की गुरु से भेंट का वर्णन मिलता है। हालांकि यह बात शास्त्र सम्मत नहीं है। फिर भी दादू के पदों में गुरु की महत्ता को सिद्व करने वाले अनेकानेक पद है। संत दादू के अनुसार कोई ऐसा ज्ञानी या पंडित मिले जिसने खुद परमात्मा को जाना हो और उचित निर्देश कर शिष्य को भी उसी भक्ति–मार्ग को दिखा सके। दादू कहते हैं कि बिना गुरु के कभी विद्या सफल नहीं होती। गुरु–उपदेश से ही साधक अपनी साधना में सफल होता है और उसके जीवन में अलौकिक परिवर्तन आ जाता है। दादू की दृष्टि में सद्गुरु का कृपा–प्रसाद भक्ति का अनिवार्य ही नहीं वरन अपरिहार्य अंग है। दादू ने गुरु की वन्दना करते हुए लिखा है–

साँचा सतगुरु जे मिले, सब साज संवारै।
दादू नाव–चढ़ाई करि, ले पार उतारै।।
दादू देख दयालु की, गुरु दिखाई बाट।
ताला कूंची लाइ करि, खौले सबै कपाट।।[9]

माया–मोह की निन्दा

कबीर आदि की भाँति दादू दयाल जी ने भी माया को आत्म परमात्म मिलन प्रक्रिया में बाधक तत्व मानकर उसकी घोर निंदा की है। माया मोह आदि जीवात्मा की दृष्टि को अज्ञानांधकार से मलिन कर देते हैं जिससे वह घट–घट व्यापी ब्रम्ह को पहचानने में असमर्थ हो जाती है तथा साधक जन्म–जन्मांतर तक सांसारिक कष्ट पाता रहता हैं। 'पीव–पिछाण को अंग' अध्याय में दादू–वाणी में लिखा गया है–

उपजे बिनसै गुण धरै, यह माया को रूप।
दादू देखत थिर नहीं, खिण छाही, खिण धूप।।
जे नाहीं सो ऊपजै, है सौ उपजे नाहि।
अलख आदि अनादि है, उपजै माया माहिं।।

दादू ने कबीर की भाँति माया को कई नामों से पुकारते हुए उसकी आलोचना की है। दादू माया को बाजीगर की पुतली, सब जीव की साँपणी, मृग जल का चिलका, सब जग की ठकुराणी आदि नामों से अभिहित करते हैं।

प्रेम और विरह की भावना

ज्ञानमार्गी होते हुए भी दादू के पदों में आत्मा–परमात्मा की प्रेमानुभूति तथा विरह भावना के अनेकानेक पद है जिनमें उच्च कोटि का रहस्यवाद अनुभव होता है। संतों की दृष्टि में विरह का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है। आत्मा यहाँ विरहिणी के रूप में परमात्मा रूपी प्रियतम के लिए आतुर एवं व्याकुल दिखाई गई हैं–

विरह जगावै दरद को, दरद जगावै जीव।
जीव जगावै सुरति को, पंच पुकारे पीव।।
(विरह को अंग,125)

दादू के अनुसार इस प्रेमाभक्ति या विरह–पीडा में मन के सारे मैल–विकार नष्ट हो जाते हैं और फिर परमात्मा का दीदार देखते ही बनता है –

बिरह अगनि में जल गये, मन के मैल विकार।
दादू विरही पीव का, देखेगा दीदार।।
(विरह को अंग, 127)

संत महिमा

अन्य संत कवियों की तरह दादू ने साधु, संत के लक्षण बताते हुए उसे सच्चा भक्त माना है। संत को सदैव आडम्बरों व कर्मकाण्डों से दूर रहते हुए निष्काम भक्ति का आचरण करना चाहिए। दादू दयाल के अनुसार जो लोग संत या भक्त होते हैं वे अंतः करण की वृत्ति को विषयों से हटा कर ब्रम्हाकार कर लेते हैं। क्रोधाग्नि को जला कर क्षमा–जल बना लेते हैं तथा 84 लाख योनियों के बिगड़े तन को पुनः सुधार देते हैं। साधु महिमा में संत का लक्षण बताते हुए दादू जी कहते हैं –

विष का अमृत कर लिया, पावक का पाणी।
बाँका सूधा कर लिया, सो साधु बिनाणी।।
(साधु महिमा, 118, दादू वाणी, पृ 319)

भक्ति मार्ग के अन्य लक्षण

संत दादू जी की वाणी में भक्ति व मुक्ति दोनों को पर्याय माना है। दादू के अनुसार मुक्ति इसी संसार में इसी शरीर से प्राप्त हो जाती है। जीते–जी अज्ञान आदि बन्धनों से मुक्त हो जाना ही वास्तविक मुक्ति है। आपा का परित्याग अर्थात अहं (मैं) की भावना से मुक्ति भक्ति का प्रथम लक्षण है–

दादू छूटे जीवतां , मूवां छूटे नाँहि।
मूवां पीछे छुटिये , तो सब आये उस माँहि।।
(सजीवन को अंग,41)

आपा मेटे हरि भजै , तन मन तजै विकार।

निवैरी सब जीव सौं', दादू यह मत सार ।।[10]

संत दादू की भक्ति–साधना में दया और निर्वैरता तथा करुणा का बड़ा महत्व प्रतिपादित किया गया है। दादू दयाल जी की ज्ञान व भक्ति–पद्वति का सार इन दो पदों में गागर में सागर की तरह देखा जा सकता है–

निर्वैरी सब जीव सौं, संत जन सोई।

दादू एकै आतमा, बैरी नहीं कोई।।

काहे को दुःख दीजिये, घर–घर आतम राम।

दादू सब संतोषिये, यह साधू का काम।।[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दूसरी परंपरा की खोज, डॉ. नामवर सिंह, पृ. 55 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982
2. दादूवाणी की भूमिका, सं.था. रामप्रसाद दास स्वामी, पृ. प्ट
3. दादूवाणी की भूमिका, सं.था. रामप्रसाद दास स्वामी, पृ. ग्प्
4. स्वामी दादू दयाल जी वाणी : स्वामी मंगलदास, माया को अंग : 136
5. स्वामी दादू दयाल जी वाणी : स्वामी मंगलदास, मधि को अंग : 39
6. स्वामी दादू दयाल जी वाणी : स्वामी मंगलदास, गुरूदेव को अंग : 2
7. श्री दादूवाणी, सं.था. रामप्रसाद दास स्वामी, भूमिका, VI
8. श्री दादूवाणी, सं.था. रामप्रसाद दास स्वामी, स्मरण को अंग (74), पृ.47
9. स्वामी दादूदयाल जी की वाणी, गुरूदेव को अंग (11,6)
10. श्री दादूवाणी सं. रामप्रसाद दास स्वामी, दया निर्वेरता को अंग, पृ. 420
11. श्री दादूवाणी सं. रामप्रसाद दास स्वामी, दया निर्वेरता को अंग, पृ. 429

❑❑❑